नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-5

आंखों देखी

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्रांकन
आबिद सुरती

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ISBN 978-81-237-5043-9

पहला संस्करण : 2007
बारहवीं आवृत्ति : 2019 *(शक 1940)*
© राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
Aankho Dekhi *(Hindi)*

₹ 70.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in

nbt.india
एकः सूते सकलम्

चोर-चकार और चिड़िया

समझदार बीवी

हाथी जैसे कान

बगुला बेईमान

आंखों देखी

चीता वला ससुराल

खड़बड़-खड़बड़ कुछ खोदत है

कौआ चला हंस की चाल

चल रे ढोलक ढम ढम ढम

नहले पर देहला

nbt.india
एकः सूते सकलम्

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई

nbt.media
एकः सूते सकलम्

चोर चकार और चिड़िया

एक था किसान। उसने खेत जोत कर ज्वार बोई। ज्वार में बड़े-बड़े भुट्टे लगे। किसान ने सोचा...अब एक चौकीदार रखना होगा। वह पहरा भी देगा और चिड़ियों को भी उड़ाएगा।

चौकीदार रात में गश्त लगाता। दिन में परिंदों को उड़ाता। यों काम करते हुए कई दिन गुजर गए। एक रात चोर आए और चौकीदार को पीट कर भुट्टे चुरा ले गए। दूसरे रोज चौकीदार भी भाग निकला। किसान ने नया चौकीदार रखा। चोरों ने मार-मार कर उसको भी दुंबा बना डाला और भुट्टे चुरा कर चंपत हो गए।

किसान सोचने लगा...यह तो बड़ी मुसीबत खड़ी हो गई। इसका कोई उपाय तो खोजना होगा। सोचते-सोचते उसे भगवान खेतो जी की याद आ गई। खेतो जी तो बड़े ही प्रतापी देवता हैं। उनके इशारे पर सूरज निकलता है और उनके संकेत पर दिन ढल जाता है। उन्हीं को दुहाई देनी पड़ेगी।

उसी रात भगवान खेतो जी उसके सपने में आए। उन्होंने किसान से पूछा, 'भक्त, तुमने हमें याद किया?' किसान ने 'हां' कहते हुए हाथ जोड़ कर बताया, 'भगवान, आपकी कृपा से ज्वार में बड़े-बड़े भुट्टे लगते हैं पर

चोर रहने नहीं देते। उन्होंने दो चौकीदारों को मार भगाया है। भगवान, अब आप ही कोई उपाय कीजिए। कोई रास्ता दिखाइए।'

खेतो जी बोले, 'भक्त, आज से तुम्हारी चिंता खत्म और हमारी शुरू। खेत में एक बांस गाड़ दो, फिर देखो तमाशा।'

सवेरे आंखें खुलते ही किसान ने सबसे पहले भगवान के आदेश के अनुसार खेत के बीच एक बांस गाड़ दिया। सूरज ढला। आकाश में लाली छाई। शाम हुई। भगवान तो चिड़िया बन कर उस बांस पर बैठ गए। आधी रात हुई। चोर आए। वे दबे पांव खेत में घूमने लगे। यह देख चिड़िया बोली,

घूमना-फिरना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

चोर चौंके। 'अरे, यह कौन बोला?' इधर-उधर देखा तो कोई दिखाई नहीं दिया। चोरों ने भुट्टे काटना शुरू कर दिया। यह देख चिड़िया बोली,

काटना-वाटना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

चोरों ने चारों तरफ देखा, लेकिन कोई दिखाई नहीं पड़ा। उन्होंने भुट्टों की गठरी बांध ली। यह देख चिड़िया बोली,

बांधना-वांधना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

चोर बौखला कर यहां-वहां देखने लगे। तभी उनकी नजर बांस पर बैठी चिड़िया पर ठहरी। वे पत्थर फेंक कर उसे मारने लगे। चिड़िया बोली,

मारना-वारना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

nbt.india
एकः सूते सकलम्

चिड़िया नीचे नहीं आई तो उन्होंने जाल फेंका। चिड़िया फंस गई। वह नीचे आते हुए बोली,

जाल-वाल अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

तभी सारे चोर चिड़िया पर टूट पड़े और उसे बुरी तरह पीटने लगे। चिड़िया फिर बोली,

पीटना-वीटना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

अब चोर ऐसे आगबबूला हुए कि वे चिड़िया को काट कर उसके टुकड़े-टुकड़े करने लगे। फिर भी चिड़िया बोली,

nbt.india
एकः सूते सकलम्

काटना-वाटना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

चोरों ने अलाव जलाया और चिड़िया के टुकड़े भूनने लगे। तभी चिड़िया का एक टुकड़ा बोला,

भूनना-वूनना अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

फिर सब चोर चिड़िया को खाने बैठे। सभी ने एक-एक टुकड़ा उठाया। जैसे ही वे मुंह में डालने लगे कि एक साथ सारे टुकड़े एक ही सुर में बोल उठे,

चोरी-चकारी अब छोड़ो जी
आज रखवाला है खेतो जी

चोरों का सरदार अब घबड़ाया। वह बोला, 'यह तो बड़ी हैरतअंगेज बात है। यहीं कहीं जरूर कोई दैत्य छिपा होगा। यह सब उसी का करिश्मा है। वह हमारा कलेवा कर जाए इससे पहले यहां से नौ-दो-ग्यारह हो जाने में ही हमारी भलाई है।'

सभी चोर इतने डरे हुए थे कि सबकुछ वहीं छोड़ कर भाग निकले। इसके बाद वे लौट कर फिर कभी नहीं आए।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

समझदार बीवी

एक थे सरदार जी और एक थी उनकी बीवी। दिन भर खटने के बाद थके-मांदे सरदार जी शाम को घर लौटे और बीवी से कहा, 'आज तो हम थक कर चूर-चूर हो गए हैं। अगर आप थोड़ा-सा पानी गरम कर दें तो हम नहा कर थकान उतार लें।'

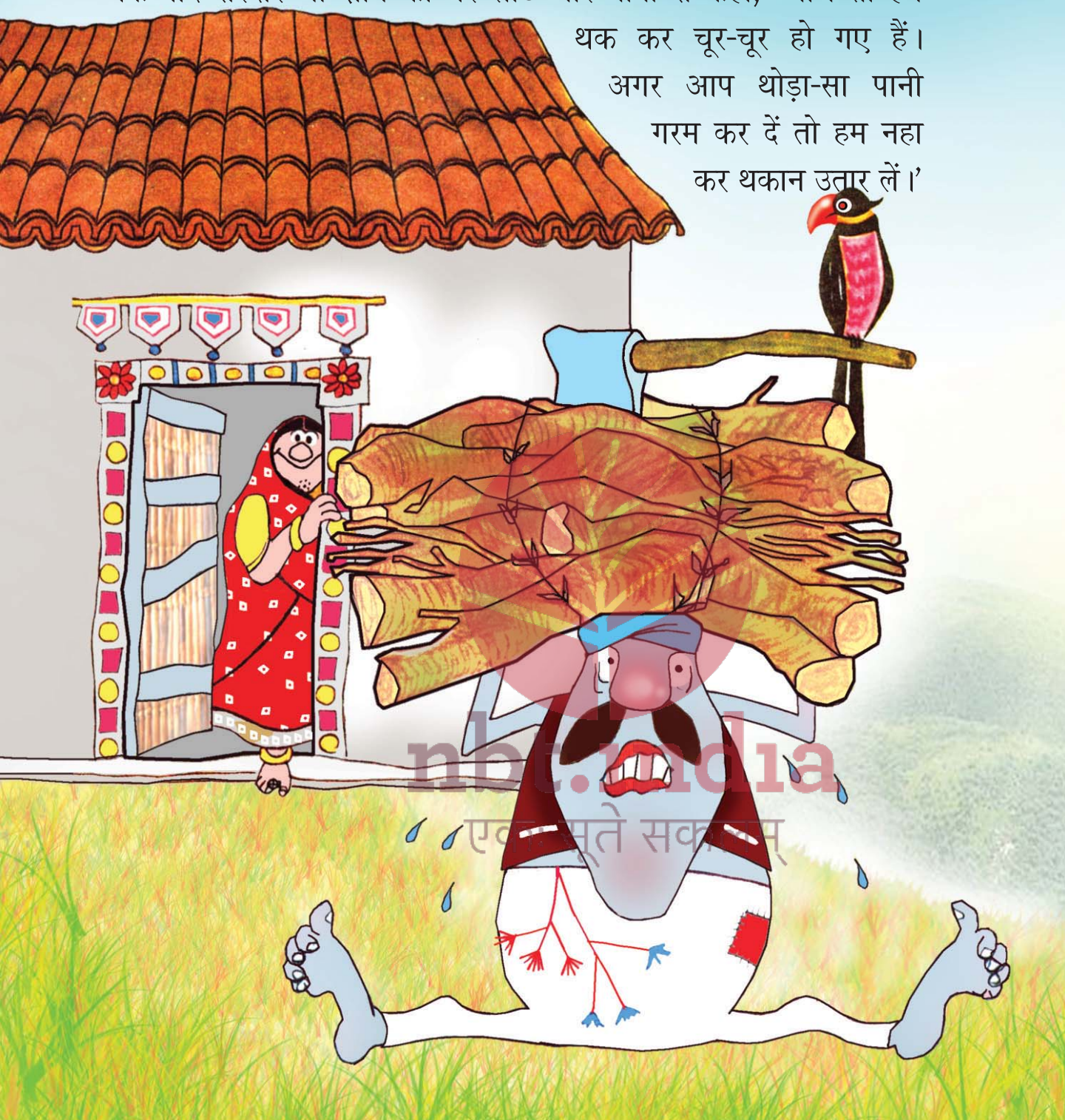

nbt.india

बीवी बोली, 'वाह, यह तो मेरा फर्ज है। मैं खुशी-खुशी पानी गरम कर दूंगी। जरा वह हंडा तो उठा लो।' सरदार जी ने हंडा उठाया, 'अब?' बीवी बोली, 'कुएं से इसमें पानी भर लाओ।'

सरदार जी पानी भर लाए, 'अब?' बीवी बोली, 'हंडे को चूल्हे पर रख दो।' सरदार जी ने हंडा चूल्हे पर रखा, 'अब?' बीवी बोली, 'अब लकड़ियां सुलगाओ।' सरदार जी ने लकड़ियां सुलगाई, 'अब?'

बीवी बोली, 'चूल्हा फूंको।' सरदार जी ने फूंक-फूंक कर चूल्हा जलाया, 'अब?' बीवी बोली, 'पानी को गर्म होने दो।' सरदार जी ने पानी को गर्म होने दिया, 'अब?' बीवी बोली, 'हंडा नीचे उतार लो।'

सरदार जी ने हंडा नीचे उतारा, 'अब?' बीवी बोली, 'हंडे को गुसलखाने में रख दो।' सरदार जी ने हंडा गुसलखाने में रखा, 'अब?' बीवी बोली, 'जा कर नहा लो।'

सरदार जी स्नान करके बाहर निकले, 'अब?' बीवी बोली, 'हंडा उसकी जगह पर रख दो।' सरदार जी ने हंडा उसकी जगह पर रखा और बदन में ताजगी महसूस करते हुए डोलने लगे। 'बल्ले-बल्ले...यह तो कमाल हो गया।' बीवी के पास आते हुए वह कहने लगे, 'जरा देखो तो सही, यह जिस्म कैसा फूल-सा हल्का हो गया है। आप रोजाना यों पानी गर्म कर दें तो मजा आ जाए।'

बीवी बोली, 'भला मुझे क्या एतराज हो सकता है? अगर आप रोजाना सुस्ती छोड़ दें तो मजा आ जाए।' सरदार जी ने कबूल किया, 'हां...चुस्ती पाने के लिए हमें सुस्ती छोड़नी होगी।' बीवी चहकी, 'यह हुई न बात... बल्ले-बल्ले।' फिर दोनों बल्ले-बल्ले करते हुए नाचने लगे।

nbtindia
सकलम्

हाथी जैसे कान

एक था राजा। एक रोज वह आदमखोर चीते का शिकार खेलने चला, पर चीता हाथ नहीं आया। शाम हो गई। पेट में चूहे बोलने लगे। राजा जंगल में भटक गया था। अपनी राजधानी भी वापस नहीं जा सकता था। भूख से बिलबिलाता हुआ वह एक बरगद की छांव में जा बैठा। तभी उसकी नजर चिड़ा-चिड़ी के एक जोड़े पर ठहरी।

राजा को भूख जोर की लगी थी। उसने चिड़ा-चिड़ी को भून कर खा जाने का तय किया। बेचारे चिड़ा-चिड़ी चुपचाप अपने घोंसले में बैठे थे।

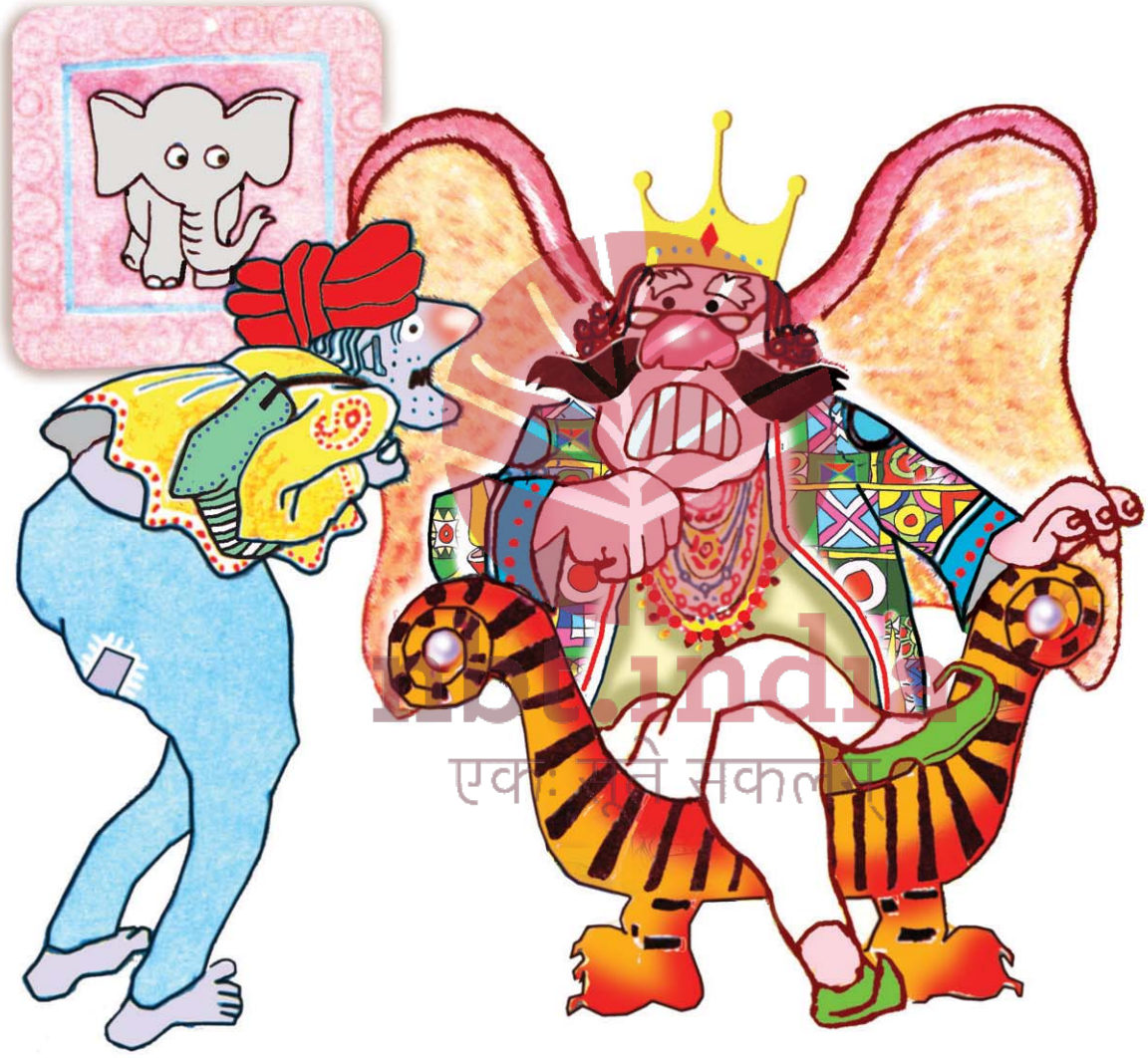

राजा ने उन्हें पकड़ कर उनकी गरदन मरोड़ी और भून कर खा गया। इससे राजा को बहुत बड़ा पाप लगा। तुरंत उसके कान हाथी के कान जैसे बड़े हो गए। राजा सोच में पड़ गया। अब क्या किया जाए?

किसी तरह वह जंगल से निकला और अंधेरा होने के बाद चुपचाप अपने महल में घुस गया। फिर दीवान को बुलवा कर सारा किस्सा कह सुनाया। अंत में जोड़ा, 'यह राज की बात है। कोई जानने न पाए। न ही किसी को हमारे कमरे में आने की इजाजत दी जाए।' राजा का कमरा सातवीं मंजिल पर था।

दो रोज बाद राजा के बाल काटने के लिए नाई आया। दीवान ने राज से पूछा, 'अब?' राजा ने झल्ला कर कहा, 'मेरा सिर! दाढ़ी बनवानी है। सिर मुंडवाना है। उसे ऊपर भेज दो।' अकेला नाई सातवीं मंजिल पर पहुंचा। उसने राजा के बड़े-बड़े कान देखे और मुंह फेर कर हंस दिया। राजा ने भंवे टेढ़ी कर कहा, 'सुनो टुन्नी, अगर तुमने किसी से कुछ भी कहा, तो हम तुम्हें कोल्हू में पीस कर आदमी से भूसा बना देंगे।' नाई ने हाथ जोड़ कर कहा, 'महाराज, यह तो राज घराने की इज्जत का सवाल है। यों समझ लो कि मैंने अपने होंठ सी लिए है।'

टुन्नी नाई था दिमाग का थोड़ा कमजोर। उसके पेट में बात कैसे टिकती? वह इधर जाता, उधर जाता और सोचता...बात कहूं तो किससे? जिससे भी कहूंगा वह महल में जा कर चुगली कर आएगा और मेरी खटिया खड़ी हो जाएगी। बात मुंह से निकल जाए इससे पहले वह जंगल की ओर दौड़ा। राज उसके पेट में गुड़गुड़-गुड़गुड़ कर रहा था। मुंह से कूद पड़ने के लिए जोर

nbt.india
एकः सते सकलम्

लगा रहा था। आखिर नाई ने जंगल में पहुंच कर एक पेड़ से कह डाला,

हाथी जैसे कान राजा के हाथी जैसे कान
कहना मेरा मान राजा के हाथी जैसे कान

यह सुन कर पेड़ को मजा आ गया। वह मस्ती में आ कर डोलते हुए गाने लगा,

हाथी जैसे कान राजा के हाथी जैसे कान
कहना मेरा मान राजा के हाथी जैसे कान

तभी वहां एक बढ़ई पहुंचा। पेड़ को गाते देख वह तो चकित रह गया। उसने सोचा...क्यों न मैं इस पेड़ की लकड़ी से बाजा बनाऊं और राजा को नजर करूं। राजा प्रसन्न होगा तो मेरा बेड़ा पार हो जाएगा।

बढ़ई ने उस पेड़ को काट उसमें से एक तबला, एक सारंगी और ढोलक बनाया। जब वह इन जादुई बाजों को ले कर महल पहुंचा, दीवान उसे रोक खुद राजा के पास गया और सूचना दी। राजा ने कहा, 'उसे ऊपर आने की जरूरत नहीं। उससे कहो कि नीचे बगीचे में बैठ कर अपने जादुई बाजों का करिश्मा दिखाए।'

बढ़ई दीवान जी के साथ बाजे ले कर बगीचे में गया। अभी तो उसने तीनों बाजे रखे ही थे कि हरकत शुरू हो गई। तबला अपने आप बजने लगा,

हाथी जैसे कान राजा के हाथी जैसे कान
कहना मेरा मान राजा के हाथी जैसे कान

सारंगी गाने लगी,

हाथी जैसे कान राजा के हाथी जैसे कान
कहना मेरा मान राजा के हाथी जैसे कान

nbt.india
एक: सूते सकलम्

उत्तर में ढोलक ढप-ढप करके बोलने लगा,

हाथी जैसे कान राजा के हाथी जैसे कान
कहना मेरा मान राजा के हाथी जैसे कान

सातवीं मंजिल के झरोखे में खड़ा राजा समझ गया। उसने बढ़ई को इनाम दे कर तीनों बाजे महल में रख लिए। अब बारी नाई की थी। दीवान उसे ढूंढ लाया तो राजा ने कड़कती हुई सख्त आवाज में पूछा, 'सच सच बताना टुन्नी, राज की बात तुमने किसे बताई थी?'

नाई बोला, 'महाराज, बात तो मैंने किसी से नहीं कही। मेरा मतलब है, किसी इंसान से नहीं कही। पेट में बहुत उमड़-घुमड़ होने लगा तो मुझे एक पेड़ को बतानी पड़ी। क्षमा महाराज क्षमा।' राजा ने उसे सात समंदर पार भेज दिया, ताकि यहां किसी को भी 'हाथी जैसे कान' का राज पता न चले।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

बगुला बेईमान

एक थी सोना। सुंदर ऐसी थी कि लोग उसे देखते तो देखते ही रह जाते। एक रोज सोना अपनी सहेलियों के साथ मिट्टी लेने गई। जहां वह खोदती वहां से सोना निकलता और जहां सहेलियां खोदतीं वहां से मिट्टी निकलती। यह देख सहेलियां जल भुन कर राख हो गईं। उन्होंने अपनी-अपनी टोकरी उठाई और सोना को अकेली छोड़ कर चल दीं।

सोना ने अपनी टोकरी उठा कर सिर पर रखने की बड़ी कोशिश की, लेकिन वह सफल नहीं हुई। तभी वहां एक बगुला आया। सोना ने कहा, 'बगुले राजा बगुले राजा। यह टोकरी भारी है। आप इसे सिर पर चढ़ाने में मेरी मदद नहीं करोगे?'

nbt.india
एकः सूते सकलम्

बगुला बोला, 'अगर तुम मुझसे ब्याह करने को राजी हो जाओ तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा।' सोना ने 'हां' कर दी। बगुले ने सहारा दे कर टोकरी सिर पर रखवा दी। टोकरी उठा कर सोना घर चली। घर पहुंच कर उसने अपनी मां को सारी बात बतायी।

मां ने कहा, 'अब तुम घर से बाहर मत जाना। बगुला बाट जोह कर चला जाएगा।' बाहर खड़े हुए बगुले ने यह सुना तो वह भड़क उठा। उसने तुरंत अपनी बिरादरी वाले सारे बगुलों को बुला लिया। फिर हुक्म दागा, 'इस गांव की झील का सारा पानी पी डालो।' सारे बगुले पानी पीने लगे। देखते ही देखते झील सूख गई। जब सोना के पिता अपनी गायों को पानी पिलाने के लिए झील पर आए तो क्या देखा? झील में तो सिर्फ कंकर हैं। उन्होंने करीब खड़े हुए बगुले से कहा :

पानी छोड़ो बम-बम बगुले
दिन मत तोड़ो चम-चम बगुले
प्यासे हैं घुड़साल में घोड़े
गाय गोरू बैठे हैं हाथ जोड़े

बगुला बोला, 'अपनी लाडली सोना का ब्याह मुझसे करने का वादा करो तो मैं झील फिर से भर दूंगा।' सोना के पिता ने वादा किया। बगुले ने तुरंत अपनी बिरादरी वाले सारे बगुलों को बुलाया। फिर नया हुक्म दागा, 'नदी से पानी ले कर झील भर दो।' बगुले तुरंत काम में जुट गए। वे चोंच में पानी भर कर लाते और झील में छोड़ कर वापस नदी की दिशा में उड़ जाते। देखते ही देखते झील पानी से छलक उठी। सोना का ब्याह आखिर बगुले के साथ हो गया। सोना को वह अपनी पीठ पर बैठा कर घर ले आया। अब दोनों साथ रहने लगे। बगुला जब दानें चुगने जाता तो अपने

nbt.india
एक: सत् सकलम्

साथ सोना के लिए भी थोड़े फल ले आता। ऐसे ही साल भर बीत गया। सोना एक लड़के की मां बन गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

एक रोज सोना के पिता ने सोचा...क्या पता मेरी बेटी सुखी है या नहीं? किसी को भेज कर मालूम तो करूं। सोना का भाई जाने को राजी हो गया। दो रोज की लंबी यात्रा के बाद वह बहन के घर पहुंचा। भाई-बहन एक अरसे के बाद मिले थे। बहुत खुश थे। सुख-दुख की बातें कर रहे थे। बातें इतनी थीं कि खत्म ही नहीं होती थीं। बगुले के लौट आने का समय हो गया। सोना ने कहा, 'भैया, तुम उस पीपे में छिप जाओ। बगुला सयाना भी है और खूंखार भी है। तुम्हें देख लेगा तो चोंच से मार-मार कर तुम्हारा कचूमर बना डालेगा।'

उसी पल भाई पीपे में छिप गया। सोना ने दो पिल्ले पाल रखे थे। उनमें से एक को उसने चक्की के नीचे छिपा दिया और दूसरे को गगरी में। थोड़ी देर बाद बगुला आया और बोला, 'किवाड़ खोलो, लल्ले की मां।' सोना खामोश रही, लेकिन उसका बेटा कैसे मौन रहता? वह बोल उठा :

बाउजी बाउजी बगले बाउजी
मामा जी छिपे हैं पीपे में
छोटा पिल्ला है चक्की तले
और बड़का छिपा है गगरी में

बाहर खड़े बगुले ने पूछा, 'सोना, यह लल्ला क्या बोल रहा है?' सोना ने बताया, 'वह तो नीम पागल है यों ही बड़बड़ा रहा है।' तभी बेटा फिर से बोला :

बाउजी बाउजी बगले बाउजी
मामा जी छिपे हैं पीपे में

nbt.india
एकः सूते सकलम्

छोटा पिल्ला है चक्की तले
और बड़का छिपा है गगरी में

बगुला समझ गया। दाल में जरूर कुछ काला है। वह बमका, 'किवाड़ खोलो, वरना तोड़ डालूंगा। सब का सिर फोड़ डालूंगा।' फिर भी सोना ने किवाड़ नहीं खोला। बल्कि पिछवाड़े का दरवाजा खोल अपने भाई, बेटे और दो पिल्लों के साथ मायके चली गई। जब बगुला किवाड़ तोड़ कर घर में घुसा तो वहां कोई भी नहीं था। यह देख उसने सिर पीट लिया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

आंखों देखी

एक था बनिया। नाम था वीरचंद। गांव में रहता था। सौदा-सुलफ बेचता था और अपनी गुजर-बसर करता था। गांव में काठियों और कोलियों में पुश्तैनी बैर था। एक रोज काठियों की चाल बदली और कोलियों के तेवर। बीच चौराहे पर तलवारें खींच कर दोनों एक दूसरे पर टूट पड़े। नतीजा यह निकला कि दो कोली जख्मी हुए तो एक काठी का सिर धड़ से अलग हो गया। लहू का फव्वारा उड़ा। यह देख बनिया दहल गया। अपनी दुकान बंद कर किवाड़ की आड़ में से सब कुछ देखता रहा। सूखे पत्ते की तरह कांपता रहा। लोग चिल्ला रहे थे...भागो, काठी मारा गया है। कहीं से पुलिस वाले दौड़ आए। गांव के मुखिया और पटवारी भी आ पहुंचे। सबने मृत काठी की लाश देख कर एक ही बात कही, 'यह वार रघु कोली का है। इतनी सफाई से सिर वही काट सकता है।' लेकिन कानूनी कार्रवाई करनी हो तो गवाह भी चाहिए। किसी ने कहा, 'वीरचंद सेठ अपनी दुकान में मौजूद थे। चश्मदीद गवाह वे ही बन सकते हैं।'

nbt.india
एक सूत्र सकलम्

दूसरे रोज बनिए को थाने बुलवाया गया। 'बोल बनिए।' थानेदार ने पूछा, 'तू क्या जानता है?' बनिए ने हाथ जोड़ कर कहा, 'सरकार, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। अपनी दुकान में बैठ कर मैं बही लिख रहा था। मुझे क्या मालूम कि चौराहे में क्या हो रहा है।' थानेदार गुर्राया, 'दो डंडे पड़ेंगे तो सब मालूम हो जाएगा। याद रहे, कल अदालत में तुझे गवाही देनी है। अगर सच-सच नहीं बताया तो...'

बनिए को पसीना छूट गया। रात हो चुकी थी, लेकिन नींद नहीं आ रही थी। वह सोच रहा था...यों कहूंगा तो कोलियों से बैर हो जाएगा और त्यों कहूंगा तो काठियों से दुश्मनी हो जाएगी। मेरे लिए तो दोनों तरफ खतरा है। कोई उपाय खोजना पड़ेगा।

सुबह होने से पहले बनिए को एक नुस्खा सूझा और वह सिर पर पगड़ी बांध कर चल पड़ा। रास्ते में एक काठी का घर दिखाई दिया। उसने कुंडी खटखटाई। काठी ने किवाड़ खोल कर पूछा, 'क्या बात है वीरचंद, सवेरे-सवेरे कैसे पधारना हुआ?'

'मुबारकबाद देने।' बनिया बोला, 'गांव के सारे कोली भीगी बिल्ली बन गए हैं। कहते हैं कि गलती से उनके हाथों एक हत्या हो गई। अब तो उन पर कहर ही टूटने वाला है।' बनिए की बात सुन कर काठी खुश हो गया। उसने तुरंत सौ का एक नया नोट निकाल कर बनिए को बख्शीस दी, ताकि कल अदालत में भी वह उनके पक्ष में बोले।

अब बनिया एक कोली के घर पहुंचा। कोली उसकी सूरत देख बोला, 'क्या बात है वीरचंद, सवेरे-सवेरे रास्ता तो नहीं भूले हो न?'

'रास्ता तो काठी भूले हैं।' बनिया बोला, 'आप लोगों ने उनके एक मरद की खटिया खड़ी कर ऐसा सबक सिखाया है कि जीवन भर नहीं भूल

nbt.india
एक: सत् सकलम्

सकेंगे। वाह! सारा गांव कोलियों की मर्दानगी पर गर्व कर रहा है।' यह सुन कर कोली खुश हो गया। उसने सौ-सौ के दो नोट निकाले और बनिए को इनाम में दिए ताकि कल अदालत में भी वह उनके पक्ष में बोले। दोनों नोट जेब में डालते हुए बनिए ने मन ही मन कहा...आज काठी और कोली, दोनों को उल्लू बनाया। कल अदालत को भी ठगना है।

दूसरे रोज मुकदमा शुरू हुआ। न्यायाधीश ने कहा, 'वीरचंद, सौगंध लो।' बनिया बोला, 'जो भी कहूंगा सच कहूंगा और सच के सिवा और कुछ भी नहीं कहूंगा।' न्यायाधीश ने पूछा, 'अब बताओ, हत्या कैसे हुई और किसने की?'

बनिया बोला, 'सरकार, इधर से काठी मर्द मुस्कराए और उधर से कोली शेर गुर्राए।'

'फिर क्या हुआ?'

'वही जो होना था।'

'वही माने क्या?'

'इधर से काठी मर्द दनदनाए और उधर से कोली शेर टनटनाए।'

'लेकिन फिर हुआ क्या?'

'फिर तो तलवार से तलवार खनखनाई और मेरी आंखों में तारे झिलमिलाए। मैं होश खो बैठा।' कह कर बनिया अदालत में धड़ाम से गिर पड़ा। फिर कठघरे में लेटे-लेटे ही जोड़ा, 'ऐसे गिरा था मैं, क्यों कि बनिए लड़ाकू नहीं होते, अहिंसक होते हैं। उनसे लहू नहीं देख जाता।' बनिया फिर से खड़ा हो कर आगे बोला, 'जैसे ही तलवार से तलवार टकराई, मुझे चक्कर आ गया। दिन में तारे दिखने लगे। मैं बेहोश हो गया। मेरी आंखें तब खुली जब पुलिस ने मुझे झकझोर कर उठाया।'

nbt.india
एकः सूते सकलम्

न्यायाधीश ने कहा, 'वीरचंद, क्या आप फिर एक बार अपनी बात दोहरा सकते हो?'

बनिया बोला,

इधर से काठी मर्द दनदनाए
उधर से कोली शेर टनटनाए
तलवार से तलवार खनखनाई
मेरी आंखों में तारे झिलमिलाए

न्यायाधीश को बनिए का झूठ सच लगा, इसलिए उसे विदा कर दिया। कोई चश्मदीद गवाह नहीं था। मुकदमा भी खारिज हो गया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

चीता चला ससुराल

एक था कुत्ता और एक था चीता। दोनों में दोस्ती हो गई। कुत्ते का अपना घर नहीं था, इसलिए वह चीते के घर में रहता था। इसी कारण चीता उससे नौकर का काम भी लेता था। बारिश का मौसम आया। चीते ने कहा, 'कुत्ते मियां, आओ हम बांबिया देखने चलें।' कुत्ते ने पूछा, 'यह बांबी क्या होती है?' चीते ने बताया, 'बांबी यानी चीटियों का डेरा। जरा देखें तो सही कि इस बार कितनी चीटियां उमड़ी हैं।'

दोनों बीहड़ में गए। देखा कि वहां बांबियों में अनगिनत चीटियों का मेला है। दोनों अंजली भर-भर कर चीटियां इकट्ठी कर घर ले आए। चीते की जोरू ने इनके बढ़िया लड्डू बनाए और सबने जी भर कर खाए। फिर भी कुछ बचे रहे।

चीते ने कहा, 'कुत्ते मियां, यह लड्डू मुझे अपने ससुराल ले जाने हैं। तुम इन्हें एक पोटली में बांध लो। कुत्ते ने तुरंत पोटली बांध दी। चीते ने बढ़िया पोशाक पहनी, हाथ में सारंगी ली और फिर एक बार कुत्ते से कहा, 'मियां, तुम यह पोटली सिर पर उठा लो।' आज्ञापालक कुत्ते ने तुरंत आज्ञा का पालन किया।

अब चीता गाता-बजाता ससुराल चला। पोटली सिर पर लिए कुत्ता पीछे-पीछे चला। रास्ते में जो भी मिलता, पूछता, 'चीते चाचा, चीते चाचा, कहां चले?' चीता कहता, 'ससुराल।' कोई कहता, 'चीते चाचा, चीते चाचा, 'जरा सारंगी तो सुनाओ।' तब चीता सारंगी बजाते हुए गाने भी लगता :

कुत्ते मियां बने हैं कद्दू
माथे पर हैं दस लड्डू
लड्डू खाए ससुर जी
ढोलक बजाए सास जी

चीते को मस्त हो कर गाते सुन कुत्ते का जी जल जाता। आखिर उसे गुस्सा आ ही गया। फिर भी उसने चीते से मधुर आवाज में कहा, 'आप आगे चलिए। मैं जरा आता हूं।' चीता आगे बढ़ गया। अब कुत्ते ने पोटली खोली और सारे लड्डू खुद ही चट कर गया। फिर कूड़ा भर कर पोटली बनाई और वह चीते के साथ हो लिया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

कुछ दूर तक साथ चलने के बाद कुत्ते ने कहा, 'चीते चाचा, चीते चाचा, जरा आप मुझे सारंगी दें तो मैं भी एक बढ़िया गीत सुना सकता हूं।' चीते ने सोचा...भले ही थोड़ी देर भौंक ले। क्या फर्क पड़ेगा? उसने सारंगी कुत्ते को दी। कुत्ता शुरू हो गया :

क क क कूड़ा लाया हूं मैं
स स स ससुर जी के लिए
क क क करकट भी है यहां
स स स सास जी के लिए

चीता बोला, 'वहा रे कुत्ते मियां, तुम्हारा गीत तुम्हारे सास-ससुर के लिए बड़ा ही मुनासिब है।' कुत्ते ने नम्रता से कहा, 'चीते चाचा, चीते चाचा, यह तो आपकी कृपा है, वरना मैं तो सिर्फ भौंकना जानता था। यह सब मैंने आप ही से तो सीखा है।'

nbt.india
एक: सूते सकलम्

चीता गाते-बजाते ससुराल पहुंचा। वह तो दामाद था। उसकी शानदार आवभगत हुई। कुत्ते को भला कौन पूछता? ससुर जी ने बड़े आदर के साथ दामाद को हुक्का दिया, लेकिन कुत्ते को पानी तक नहीं पूछा। चीता हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। कुत्ते को बुरा लगा। वह चुपके से उठ कर खिसक लिया।

हुक्का गुड़गुड़ाते हुए चीते ने मुस्करा कर बताया, 'आप सबके लिए मैं लड्डू लाया हूं। चखोगे तो जीवन भर याद रखोगे।' यह सुन कर ससुर जी के मुंह से लार टपकने लगी। सास जी ने खुशी-खुशी पोटली खोली, तो देखा कि उसमें लड्डू के बजाए कूड़ा भरा है। चीता आग बबूला हो उठा। वह कुत्ते को खोजने लगा। लेकिन कुत्ता तो कब का सटक गया था। चीते ने अपने सुसर जी से पूछा, 'क्या आप बता सकते हैं कि कुत्ते को कैसे खोजा जाए?' सुसर जी ने आसान तरीका बताया, 'नवरात्री के दिन चल रहे हैं। डांडिया रास का आयोजन करो। वह खुद देखने चला आएगा।' चीते ने नाच-गान की महफिल जमाई। वह देखने दूर दराज के गांवों से भी गाय, बकरी, भैंसे, गधे, घोड़े...सभी जानवर आए, लेकिन कुत्ता नहीं आया। वह जानता था, अगर वह डांडिया रास देखने गया और चीते ने उसे देख लिया तो वह उसे कच्चा चबा जाएगा।

दूसरे रोज एक भेड़ ने कुत्ते के आगे नाच की इतनी तारीफ की कि उसका मन ललचा गया। पर वह जाता कैसे? उसने अपनी समस्या भेड़ के आगे रखी। भेड़ ने कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं। मैं अपनी पूंछ में छिपा कर तुम्हें ले चलूंगी। चीते की क्या मजाल कि वह देख ले।' तीसरे रोज फिर ढोल बजे और नाच-गान शुरू हुआ। भेड़ की चौड़ी पूंछ में छिप कर कुत्ता नाच देखने आ पहुंचा। चीते की पैनी नजर चारों ओर घूम रही थी। लेकिन वह कुत्ते को देख नहीं सका। चौथे, पांचवे, छठे, सातवें और आठवें

nbt.india एकः सूते सकलम्

रोज भी कुत्ते ने डांडिया देखा और सलामत लौट आया।

अब केवल एक दिन बचा था। नौवा दिन। आखिरी दिन भेड़ की पूंछ में छिप कर कुत्ता फिर आ पहुंचा। ढोल, मंजीरे, अन्य साज जोरों से बजने लगे। नाच भी तेज होने लगा। सब जानवर पूंछ हिला कर झूमने लगे। भेड़ की पूंछ में कुत्ता छिपा था। उसके लिए नाचना संभव नहीं था। लेकिन नाच का नशा इतना बढ़ा और बाजे भी दनादन ऐसे बज रहे थे कि भेड़ से रहा नहीं गया। वह भी अपनी पूंछ हिला कर नाचने लगी। कुत्ता बेनकाब हो गया। उसने सोचा...नादान दोस्त खतराए जान। वह फौरन भागा और एक लठैत की आड़ में छिप गया। चीते से यह अनजान न रहा। वह लपका। सब से पहले उसने भेड़ का खात्मा किया। फिर वह लठैत की ओर बढ़ा। लठैत ने अपनी लाठी उठा ली। चीता रुक गया। फिर दूर से ही कहा, 'कुत्ते मियां, आज तो तुम बच निकले। लेकिन फिर कभी मुलाकात हुई तो मार-मार कर मलीदा बना दूंगा।'

तब से कुत्ते और चीते के बीच दुश्मनी चली आ रही है। कुत्ता चीते को दूर से ही देख भाग खड़ा होता है। यही नहीं, कुत्ते ने तब से जंगल में रहना भी छोड़ दिया है। अब वह आदमी की सोहबत पसंद करता है।

खड़बड़-खड़बड़ कुछ खोदत है

एक था ब्राह्मण। वह बड़ा ही गरीब था। एक बार उसकी जोरू ने कहा, 'बेहतर होगा अगर आप कोई छोटा-मोटा काम शुरू करें। शायद आप नहीं जानते कि अब तो कभी-कभी बच्चों को भी भूखा सोना पड़ता है।' ब्राह्मण बोला, 'मुझे तो कुछ भी नहीं आता। तुम्हीं कोई रास्ता सुझाओ।' जोरू पढ़ी-लिखी थी। उसने कहा, 'एक श्लोक मैं आपको रटवाए देती हूं। यह आप किसी भी राजा को सुनाएंगे, तो वह आपको कुछ न कुछ इनाम जरूर देगा। श्लोक भूलना नहीं।'

ब्राह्मण श्लोक रटता हुआ यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में एक नदी मिली। स्नान करने और संबल खाने के लिए वह रुक गया। जब उसका मन नहाने-धोने में लगा तो वह श्लोक भूल गया।

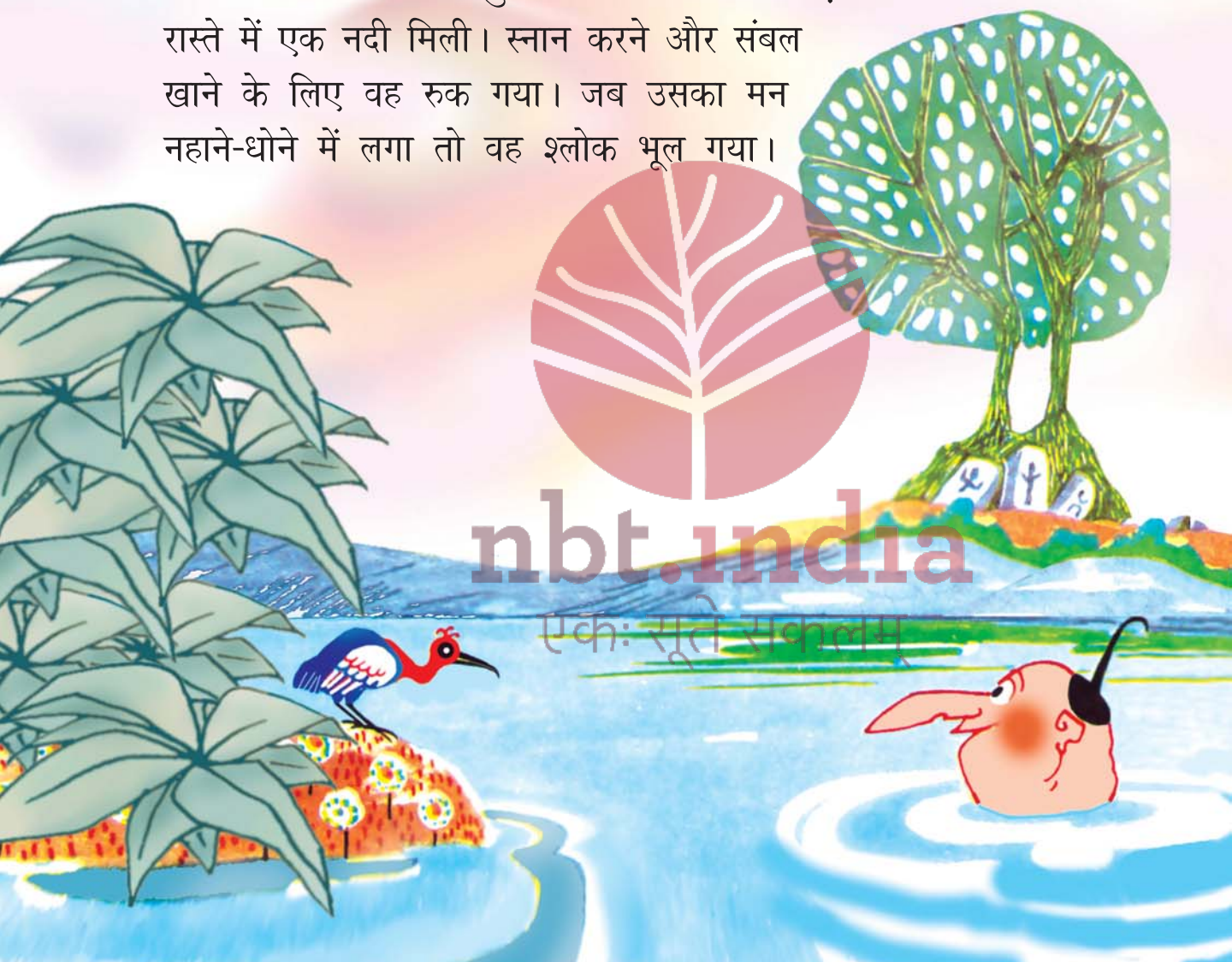

nbt.india
एकः सूते सकलम्

तभी उसने देखा कि एक बतख किनारे पर कुछ खोद रही है। उसके मन में एक नया चरण पैदा हुआ,

खड़बड़-खड़बड़ कुछ खोदत है

उसकी आवाज सुन कर बतख अपनी गरदन लंबी कर देखने लगी। तभी उसके मन में दूसरा चरण उभरा,

कर गरदन लंबी देखत है

जब दूसरी बार ब्राह्मण की आवाज सुनी तो बतख मारे डर के एक शिला के पीछे दुबक गई। ब्राह्मण के मन में तीसरा चरण बना,

उकडू-मुकडू वह बैठत है

इस बार ब्राह्मण की आवाज सुन कर बतख तेजी से दौड़ी और पानी में कूद पड़ी। इस दृश्य को देख कर ब्राह्मण के मन में चौथा चरण उठा,

और सरपट-सरपट दौड़त है

ब्राह्मण पहले वाला श्लोक भूल चुका था, लेकिन उसे यह दूसरा श्लोक हाथ लग गया था। यह मान कर कि यही श्लोक सही है, वह इसे रटता हुआ आगे बढ़ा,

खड़बड़-खड़बड़ कुछ खोदत है
कर गरदन लंबी देखत है
उकडू-मुकडू वह बैठत है
और सरपट-सरपट दौड़त है

चलते-चलते वह एक नगर में पहुंचा। पता पूछ कर राजा के दरबार में गया और सभी को अपना श्लोक सुनाया। इस विचित्र श्लोक का मतलब ना राजा की समझ में आया ना ही उसके नवरत्नों के पल्ले कुछ पड़ा। जवाब कैसे देते? आखिरकार राजा ने ब्राह्मण से कहा, 'पंडित जी, दो-चार

nbt.india
एकः सत् सकलम्

रोज बाद आप फिर से पधारें। हम आपके श्लोक का जवाब अवश्य देंगे। तब तक हमारे मेहमान बन कर महल में विश्राम कीजिए।' ब्राह्मण का श्लोक राजा ने अपने कमरे की दीवार पर लिखवा लिया। इसका मतलब जानने के लिए राजा रात-रात भर जागता। सन्नाटे में अकेला बैठ कर श्लोक का एक-एक चरण बोलता और उस पर चिंतन-मनन करता।

एक रात राजा के महल में चार चोर सेंध लगाने आए। राजमहल पहुंच कर वे दीवार तोड़ने लगे। तब रात के ठीक बारह बजे थे। राजा श्लोक के पहले चरण के बारे में सोच रहा था। उधर चोर दीवार को ढहाने में व्यस्त थे। तभी राजा के शब्द उनके कानों से टकराए,

खड़बड़-खड़बड़ कुछ खोदत है

चोरों ने सोचा कि राजा शायद जाग रहा है। खुदाई की आवाज भी सुन रहा है। इसलिए चार में से एक चोर महल के झरोखे पर चढ़ा और गरदन लंबी कर यह देखने लगा कि आखिर राजा का इरादा क्या है? ठीक उसी समय राजा ने दूसरा चरण दोहराया,

कर गरदन लंबी देखत है

यह सुन कर उस चोर को यकीन हो गया कि राजा ने उसे देख लिया है। वह फौरन झरोखे से कूद कर अपने साथियों के पास आया और मशवरा करने बैठ गया। तभी राजा ने तीसरा चरण दोहराया,

उकड़ू-मुकड़ू वह बैठत है

यह सुन कर चोरों के हाथ-पांव फूल गए। उन्होंने सोचा, राजा को पता चल

nbt.india
एक: सूते सकलम्

गया है और वह सब कुछ देख भी रहा है। अब सब को गिरफ्तार करवा कर वह फांसी के फंदे पर ही लटका देगा। मारे डर के सभी एक साथ दौड़े। तभी राजा ने चौथा चरण दोहराया,

और सरपट-सरपट दौड़त है

ये चोर हकीकत में राजा के चौकीदार ही थे। उनकी नीयत बिगड़ी थी, इसलिए डाका डालने आए थे। वे ऐसे दौड़े कि सीधे अपने-अपने घर जा कर छिप गए।

दूसरे रोज दरबार लगा। दरबार में सभी मौजूद थे, चौकीदारों के अलावा। तब राजा ने पूछा, 'आज पहरेदार क्यों नही आए? सब खैरियत से तो है न?' तुरंत एक सिपाही घोड़े पर सवार हो कर गया और चारों को बुला लाया। चारों चुपचाप खड़े हो गए।

राजा ने पूछा, 'फरमाइए, आज आप लोगों ने किस खुशी में छुट्टी ली?' चारों चौकीदार सिर से पांव तक कांपने लगे। जवाब में उन्होंने रात वाली घटना सही-सही सुना डाली। राजा हैरान रह गया। उसने सोचा—यह चमत्कार उस ब्राह्मण के श्लोक का है। श्लोक तो बड़ा ही कारगर सिद्ध हुआ। राजा ब्राह्मण पर प्रसन्न हुआ। उसने ब्राह्मण को दरबार में बुलवा कर एक लाख रुपया इनाम दिया। वह रुपये उसने घर पहुंच कर अपनी जोरू को दे दिए। उस रोज ब्राह्मण के घर में हलवा-पूड़ी बनी और सबने साथ बैठ कर मौज से खाना खाया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

कौआ चला हंस की चाल

एक था सरोवर। उसके किनारे बरगद का एक पेड़ था। उस पर एक कौआ रहता था। कौआ तो काजल-सा काला था। काना और लंगड़ा भी था। जब वह कांव-कांव करता उड़ता, तो ऐसा लगता जैसे यह गिरा, वह गिरा। फिर भी उसकी ठसक कम नहीं थी। वह मानता था, न तो कोई उसकी तरह उड़ सकता है, न मधुर वाणी बोल सकता है।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

एक रोज वहां कुछ हंस आए। रात भर के लिए वे बरगद पर रहे। भोर होने पर कौए ने उनको देखा। वह सोच में पड़ गया...भला ये लंबी गरदन वाले प्राणी कौन होंगे? कहां से आए होंगे? उसने कभी हंस देखे होते तभी पहचान पाता न!

कौए ने सिर तिरछा कर रौब से पूछा, 'कौन हो तुम? बिना हमारी इजाजत के इस पेड़ पर क्यों बैठे हो?' एक हंस ने परिचय देते हुए कहा, 'श्रीमान, हम मानसरोवर के हंस हैं। भारत दर्शन को निकले हैं। थोड़ा विश्राम कर यहां से आगे बढ़ जाएंगे।' कौआ बोला, 'सो तो ठीक, लेकिन ठीक से उड़ना भी जानते हो या नहीं? या सिर्फ पंख सफेद बनाना जानते हो?' हंस ने कहा, 'जी...थोड़ा बहुत उड़ लेते हैं।' कौए ने सीना चौड़ा किया, 'बस? हमें तो इक्यावन तरीके से उड़ता आता है। तुम्हें?'

हंस ने बताया, 'एकाध-दो उड़ानें जानते हैं।' कौआ फिर बोला, 'ब... स?' हंस ने नम्रता से कहा, 'जी...हम इतना ही जानते हैं।' कौआ अकड़ कर बोला, 'भला हमारी बराबरी कौन कर सकता है? कहां इक्यावन और कहां दो। आखिर कौआ—कौआ होता है और हंस—हंस।'

हंस सुनते रहे। मन ही मन मुस्काते भी रहे। उन हंसों में एक सिरफिरा भी था। उससे रहा नहीं गया। उसने भड़क कर कहा, 'कौए काका, बकवास करने से क्या लाभ? पहले आप अपनी इक्यावन उड़ानें तो बताएं। हम भी जाने कौआ—कौआ कैसे होता है और हंस हंस!'

कौए ने चुनौती स्वीकार कर ली। दम भर के लिए वह ऊपर उड़ा और बोला, 'यह हुई पहली उड़ान।' फिर नीचे आया और बोला, 'यह हुई दूसरी उड़ान।' फिर उड़ कर शाख-शाख पर बैठा और बोला, 'यह हुई तीसरी उड़ान।' अब वह दाहिनी तरफ उड़ा, 'यह हुई चौथी उड़ान।' फिर बाईं

nbt.india
एकः सत् सकलम्

तरफ उड़ा, 'यह हुई पांचवीं उड़ान।' इसी तरह उसने इक्यावन उड़ानें दिखा दीं। फिर गर्व से कहा, 'कहिए, कैसी रही हमारी उड़ानें?'

'लाजवाब।' सिरफिरे हंस ने मन में हंसते हुए कहा, 'अब आप हमारी भी एक उड़ान देखें।' कौआ बोला, 'एक उड़ान में देखना क्या? यों पंख फड़फड़ाए और यों कुछ उड़ लिए। बात खत्म।' हंस ने कहा, 'जी...लेकिन यह एक उड़ान सौ के बराबर है। देखना हो तो काका हमारे साथ चलो। आपको भी पता चले कि हम डींग नहीं हांक रहे।'

nbt.india
एकः सूते सकलम्

'चलो, अभी पता चल जाएगा।' कहते हुए उसने पंख फड़फड़ाए और उड़ना शुरू किया। उसके पीछे हंस भी चला। कौआ मुड़ कर बोला, 'कहो, यही है तुम्हारी उड़ान?' हंस ने कहा, 'उड़ते चलो। यह तो केवल शुरूआत है।' कौआ बोला, 'लेकिन तुम पीछे-पीछे क्यों उड़ रहो हो? जरा चुस्ती से काम लो। आगे बढ़ो।' हंस ने कहा, 'समय आने पर हम आगे भी बढ़ेंगे।' कौआ बोला, 'तुम्हारी उड़ान में कोई दम नहीं है। चलो अब हम लौट चलें। 'हंस ने कहा, 'काका, अभी तो हमने अपनी उड़ान भी नहीं दिखाई और आप लौट जाने की बात करते हैं?'

कौआ अब थक चुका था। उड़ते-उड़ते अब हंस के पीछे आ गया। हंस ने पूछा, 'अरे काका, आप पीछे कैसे रह गए? असली उड़ान तो अभी बाकी है।'

कौआ बोला, 'तुम उड़ते रहो। हम देख रहे हैं।' कौआ अब सचमुच ढीला पड़ता जा रहा था। धीरे-धीरे नीचे आता जा रहा था। अधिक उड़ने की शक्ति अब उसमें नहीं बची थी। अब उसके पंख पानी की सतह को छू रहे थे। हंस ने मुड़ कर व्यंग्य किया, 'काका, जरा बताओ तो सही, पानी में चोंच डुबो कर उड़ने का यह कौन-सा तरीका है?' कौआ क्या जवाब देता? अब हंस ऊपर ऊपर उड़ रहा था और कौआ नीचे पानी में डुबकियां खाने

nbt.india
एकः सूते सकलम्

लगा था। हंस बोला, 'कहीं आप थक तो नहीं गए, काका? याद रहे, अभी मेरी उड़ान देखनी बाकी है।'

पानी पीते-पीते भी कौआ उड़ते रहने की कोशिश कर रहा था। कुछ दूर और उड़ने के बाद वह पानी में गिर पड़ा। हंस ने दुबारा व्यंग्य किया, 'काका, यह कोई नई उड़ान है क्या?' लेकिन कौआ तो पानी में डुबकियां ले रहा था।

हंस को दया आ गई। उसने फुरती से उतर कर डूब रहे कौए को पानी में से निकाला और अपनी पीठ पर बिठा लिया। फिर उसे ले कर आकाश की ओर उड़ चला। कौआ डर गया। वह बोला, 'यह तुम क्या कर रहे हो? मुझे तो चक्कर आ रहे हैं। फौरन नीचे चलो।' हंस ने कहा, 'अभी मैंने अपनी उड़ान कहां दिखाई है?'

कौआ गिड़गिड़ाने लगा, 'हम तुम्हारे हाथ जोड़ते हैं। पांव पड़ते हैं। हमें अपने घोंसले में छोड़ दो। दया...दया करो, हम पर।'

आकाश में से हंस ने गोता लगाया और सीधा बरगद पर आ पहुंचा। अब कौए की जान में जान आई। उस दिन से वह समझ गया कि डींगे हांकने से लाभ कुछ भी नहीं और नुकसान अधिक होता है।

nbt.india
एक: सूते सकलम्

चल रे ढोलक ढम ढम ढम

एक मेमना था। वह अपनी नानी के घर जाने के लिए निकला। रास्ते में उसे एक सियार मिला। वह भूखा था। बोला, 'मैं तुझे खा जाऊंगा।' मेमने ने कहा,

नानी के घर जाने दो
मोटा ताजा होने दो
फिर तुम मुझे खाना

nbt.india
एकः सूते सकलम्

सियार बोला, ‘ठीक है।’ मेमना आगे बढ़ा। अभी थोड़ी दूर गया था कि रास्ते में उसे गिद्ध मिला। गिद्ध ने कहा, ‘मैं तुझे खा जाऊंगा।’ मेमना बोला,

नानी के घर जाने दो
मोटा ताजा होने दो
फिर तुम मुझे खाना

गिद्ध ने कहा, ‘ठीक है।’ मेमना आगे बढ़ा। कुछ दूर जाने पर रास्ते में उसे एक बाघ मिला। बाघ बोला, ‘मैं तुझे खा जाऊंगा।’ मेमने ने कहा,

नानी के घर जाने दो
मोटा ताजा होने दो
फिर तुम मुझे खाना

बाघ बोला, ‘ठीक है।’ मेमना आगे बढ़ा। रास्ते में उसे भेड़िया, चीता आदि कई जानवर मिले। सबको उसने एक ही बात कही,

नानी के घर जाने दो
मोटा ताजा होने दो
फिर तुम मुझे खाना

आखिर में भोला-भाला मेमना नानी के घर पहुंचा और बोला, ‘नानी, नानी, मुझे रोजाना हलवा-पुड़ी खिलाओ। हट्टा-कट्टा बनाओ। मैंने सारे जानवरों से वादा किया है। वे सब मुझे खाना चाहते हैं।’

मेमने ने खूब खाया, खूब पीया और वह सचमुच हट्टा-कट्टा बन गया। उसका दिमाग भी तेजी से चलने लगा। उसने नानी से कहा, ‘नानी, नानी, मुझे एक ढोल चाहिए। मैं उसमें छिप जाऊंगा। कोई मुझे देख नहीं सकेगा। कोई मुझे पहचान नहीं सकेगा। कोई मुझे खा नहीं सकेगा।’

nbt.india
एक: सूते सकलम

नानी ने मेमने के लिए एक बढ़िया ढोल बनवाया। भीतर गुदड़ी बिछाई। मेमना ढोल में बैठ गया। अब नानी ने ढोल को ऐसा धक्का मारा कि वह लुढ़कता हुआ चल पड़ा। रास्ते में उसे चीता मिला। चीते ने ढोल से पूछा, 'भैया, तुमने कहीं मेमने को देखा है?'

ढोल के अंदर बैठा मेमना बोला,

कैसा मेमना कैसी बात
ये सब है बेकार की बात
चल रे ढोलक ढम ढम ढम
बात-बात में हो गई रात

यों सबको जवाब देता हुआ मेमना बहुत दूर निकल गया। अंत में उसे सियार मिला। सियार ने पूछा, 'भैया, तुमने कहीं मेमने को देखा है?' अंदर से मेमना बोला,

कैसा मेमना कैसी बात
ये सब है बेकार की बात
चल रे ढोलक ढम ढम ढम
बात-बात में हो गई रात

सियार सयाना था। उसने आवाज पहचान ली। 'अरे...' उसने सोचा, 'इसमें तो मेमना छिपा है। अब तो मैं इस ढोल को फाड़ कर मेमने को कच्चा-कच्चा खा जाऊंगा।' अब तक लुढ़कता हुआ ढोल मेमने के घर तक आ पहुंचा था। तुरंत मेमने ने छलांग लगाई और अपने घर में घुस गया। सियार मुंह बाएं बंद दरवाजे को देखता रह गया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

नहले पर देहला

एक था दरजी मियां का परिवार। मियां-बीवी दोनों महा कंजूस थे। उनके घर कोई मेहमान आता तो उन्हें लगता कि सिरदर्द आ गया। एक रोज उनके घर बिन बुलाए दो मेहमान आ पहुंचे। दरजी मियां चिंता में पड़ गए। उन्होंने सोचा...कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए कि ये मेहमान उलटे पांव लौट जाएं। तुरंत तरकीब भी मिल गई। दरजी मियां ने भीतर जा कर बीवी से कहा, 'सुनो बेगम, जब हम आप पर लानतें बरसाएं, तब जवाब में आप भी हम पर मलामतें बरसाना। और जब हम अपनी छड़ी ले कर आपको मारने दौड़ें, आप भाग निकलना। हम आपका पीछा करेंगे। मेहमान समझेंगे कि इस घर में जंग छिड़ी है। वे लौट जाएंगे।' बीवी बोली, 'मियां, आपका भी जवाब नहीं।'

कुछ देर बाद दरजी मियां दुकान में बैठ बीवी पर लानतें बरसाने लगे। जवाब में बीवी भी झूठ-मूठ भला-बुरा कहने लगी। दरजी मियां छड़ी ले कर मारने दौड़े। बीवी कभी न लौटने की कसम खा कर मायके जाने के लिए चल पड़ी।

मेहमान कुछ ज्यादा ही समझदार थे। वे आपस में कहने लगे, 'लगता है, मियां हमको खाना खिलाना नहीं चाहते इसलिए यह नाटक कर रहे हैं। लेकिन हम भी उन दोनों से कम नहीं। चलो, परछत्ती पर चढ़ कर छिप जाएं।'

यह सोच कर कि मेहमान चले गए

nbt.india
एकः सूते सकलम्

होंगे, कुछ मिनटों बाद दरजी मियां अपनी बीवी के साथ लौट आए। घर खाली देख दोनों बहुत खुश हुए। बला टली मान अपनी ही तारीफ करने लगे।

मियां : हम कैसे सयाने हैं दौड़े ले कर छड़ी जी

बीवी : मैं भी कैसी चंट हूं भाग खड़ी हुई जी

यह सुन कर परछत्ती पर से मेहमान बोल उठे,

हम कैसे ढीठ हैं अकल हमारी बड़ी जी

दरजी मियां और उनकी बीवी ने चौंक कर ऊपर देखा और खिसिया गए। फिर दोनों ने मेहमानों को नीचे उतारा। यही नहीं बढ़िया भोजन-पान करा कर उन्हें बिदा भी किया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्